[illegible]

यह लघु प्रबन्ध [illegible] रचना है, जो एम. फिल. के लघु-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय [illegible] विश्वविद्यालय की किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत [illegible] की गयी है।

(कु. आशा शामराव इंगवले)

कोल्हापुर।
दिनांक [illegible]

प्रा. डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड,
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर ।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु.आशा रामराव इंगळे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध "लक्ष्मीनारायण मिश्र के 'वितस्ता की लहरें' नाटक का समीक्षात्मक अध्ययन" मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूर्ण परिश्रम के साथ पूरा किया है । यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है, शोधार्थी ने मेरे सुझावोंका पूर्णतः पालन किया है । जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं ।

निर्देशक

(डॉ. व्ही. व्ही. द्रविड)

कोल्हापुर ।
दिनांक ३१ ५ : १९९१

कृतज्ञता-ज्ञापन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध लिखते समय मुझे अनेक मान्यवर व्यक्तियों की सहायता मिली। उन सबका मैं हृदय से आभारी हूँ। सर्व प्रथम मैं श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. व्यं. वि. द्रविड की अत्यंत कृतज्ञ हूँ, क्योंकि आपने मुझे शोध-कार्य में जो मार्गदर्शन किया, उसके बिना यह काम कदापि पूरा न हो सकता। ज्ञान और सहकार के स्तर पर आपने जो ऊँचाई दिखायी, उसके सामने मैं अपने को लघु अनुभव करती हूँ।

मेरे श्रद्धेय पूज्य आदरणीय माताजी और पिताजी की भी ऋणी हूँ। मेरे यहाँ तक आने में उन्होंने जो कष्ट उठाया है। उनका यह ऋण मैं कदापि नहीं भूल सकती। मेरे हितैषी मा. एम. आर. कदम जी ने भी मेरे इस शोध-कार्य में जो सहायता की, उनकी भी मैं ऋणी हूँ। इसी प्रकार मैं उन सब की कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे इस कार्य में समय समय पर सहकार्य तथा प्रेरणा दी।

धन्यवाद।

Ashyavale

कु. आशा शामराव इंगवले।

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्रथम अध्याय — लक्ष्मीनारायण मिश्रजी का नाट्य साहित्य — १.

अ) मिश्रजी का ऐतिहासिक - सांस्कृतिक नाट्यसाहित्य

द्वितीय अध्याय — हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों के विकास की रूपरेखा

अ) हिन्दी में ऐतिहासिक नाटकों का विकास

ब) ऐतिहासिक नाटक-परिभाषा और स्वरूप

क) हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों के विकास की रूपरेखा

तृतीय अध्याय — ऐतिहासिकता और आधुनिकता के सम्बन्ध में -- "वितस्ता की लहरें"

चतुर्थ अध्याय — "वितस्ता की लहरें" का नाट्य शिल्प

अ) कथावस्तु

ब) पात्र-चरित्र-चित्रण

क) कथोपकथन

ड) देश-काल-वातावरण

इ) भाषाशैली

ई) उद्देश्य

उ) रंगमंचीयता

ऊ) अभिनेयता

ए) रसनिष्पत्ति

[illegible]

[illegible]

[illegible] "वितस्ता की लहरें" [illegible]यता

[illegible]

भूमिका

पहले से ही भारतीय इतिहास और भारतीय संस्कृति में रुचि होने के कारण, अनुसंधान के लिए मैंने ऐतिहासिक नाटक चुना । एम.ए. में मैंने लक्ष्मीनारायण मिश्र कृत 'सिंदूर की होली' नाटक पढ़ चुकी थी । विषयों का अनूठापन, शिल्प की विविधता और प्रभावी भाषाशैली के कारण मिश्र जी का नाटक साहित्य मैं पढ़ती रही । मेरी रुचि के अनुसार मुझे एम. फिल. की परीक्षा के लिए विशेष साहित्य विधा के रूप में 'नाटक' विधा रखने की सुविधा मिली। उस समय लक्ष्मीनारायण मिश्र के ग्यारह ऐतिहासिक नाटकों को लेकर प्रबन्ध प्रस्तुत करना अनावश्यक महसूस हुआ, तब मैंने लक्ष्मीनारायण मिश्र के एक ही ऐतिहासिक नाटक 'वितस्ता की लहरें' को लेकर प्रबन्ध प्रस्तुत करने का निर्णय लिया ।

इस नाटक में लक्ष्मीनारायण मिश्र जी ने अनेक प्रकारों से यवन संस्कृति तथा भारतीय संस्कृति की तुलना करके भारतीय संस्कृति के गौरव को, उसके सृजन संस्कार और उदारता के भावों को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है । यवन और भारत दोनों ही देशों के सांस्कृतिक संघर्ष में भारत विजयी होता है । वितस्ता के तट पर भारत ने अपनी स्वतंत्रता की रक्षा कर बर्बर यवनों को अपनी उदात संस्कृति के सम्मुख नतमस्तक कर दिया है ।

इस नाटक में छः अध्याय हैं । प्रथम अध्याय में लक्ष्मीनारायण मिश्र का नाट्य-साहित्य का परिचय दिया है । मिश्र जी ने ऐतिहासिक सांस्कृतिक नाटकों के साथ-साथ समस्यामूलक सामाजिक नाटकों की रचना की और भावना तथा संवेदना के स्थान पर बौद्धिकता को प्रतिष्ठित किया । प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रति भावुकतापूर्ण ममत्व मिश्र जी के ऐतिहासिक नाटकों में उपलब्ध है । समस्या नाटकों में मिश्र जी का मुख्य ध्येय यथार्थ जीवन की आधुनिक समस्याओं को प्रस्तुत करना तथा उनके समाधान के लिए बौद्धिक तर्क प्रस्तुत करना रहा है ।

दूसरे अध्याय में ऐतिहासिक नाटकों के शिल्प की रूपरेखा का विवेचन

किया है । भारतेन्दु काल के अधिकतर ऐतिहासिक नाटक बंगाली नाटकों के अनुवाद या उनसे प्रेरणा लेकर लिखे गये थे और नाटकीय कला की दृष्टि से बहुत उच्चकोटि की रचना इसमम्य नहीं की जा सकी । इस प्रकार भारतेन्दु युगीन ऐतिहासिक नाटक मौलिक न होकर अनूदित हैं ।

प्रसाद युगीन नाटकों में प्राचीन भारतीय गौरव, सभ्यता तथा संस्कृति का चित्र उपस्थित करनेवाले नाटक लिखे । उनकी नाट्यकला में भारतीय और यूरोपीय दोनों प्रणालियों का समन्वय हुआ है । ऐतिहासिक अनुशीलन और नवीन कल्पना के योग से उन्होंने नाट्यकला में नवीनता की उद्भावना की ।

प्रसादोत्तर कालीन नाटकों की मूल प्रेरणा राष्ट्रीयता थी । हिन्दु-मुस्लिम एकता, देशभक्ति, अछूतोद्धार आदि युगीन समस्याओं को न्यूनाधिक रूप में भी सभी नाटककारों ने अपने नाट्य कृतियोंमें अंकित किया है ।

स्वातंत्र्योत्तर काल में नाटक का सही अर्थों में विकास और विस्तार हुआ । स्वातंत्र्योत्तर काल के ऐतिहासिक नाटकों में राष्ट्रीय एकता जन संगठन की चेतना, समानता आदर्श कल्पना आदि विचार दिखाई देते हैं ।

तीसरे अध्याय में ऐतिहासिकता और आधुनिकता के संदर्भ में 'वितस्ता की लहरें' का अध्ययन किया है । इस नाटक में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधुनिकता के बारे में कुछ विचार प्रस्तुत किये हैं । हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति की जो परंपरा है, आज उसी परंपरानुसार हमारा आचार होना चाहिए ।

चौथे अध्याय में 'वितस्ता की लहरें' के नाट्यशिल्प पर प्रकाश डाला है । इस नाटक की कथावस्तु में युग की चेतना तथा राष्ट्र की रक्षा के लिए सर्वस्व बलिदान करने की भावना को प्रतिपादित किया है । साथ ही साथ प्राचीन भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठत्व सिद्ध किया है । इस नाटक में नायक रूप महाराज पुरु का चित्रण किया है । पुरुष पात्रों में धीरोदात्त, साहसी, संयमी, बुद्धिचातुर्य, कुटनीतिज्ञता, विवेक एवं देशभक्ति आदि गुण दिखाई देते हैं । स्त्री पात्रों में त्याग,

निर्भीकता, पातिव्रत्य, पवित्रता, वीरता, वात्सल्य, धैर्य आदि गुण दिखाई देते हैं। इस नाटक में कथोपकथन, सरल, स्वाभाविक, संक्षिप्त, सशक्त एवं प्रभावपूर्ण हैं। संवादों में मनोवैज्ञानिकता का पूर्ण निर्वाह करने का प्रयास किया गया है। इस नाटक में तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का समुचित ज्ञान प्राप्त होता है। पात्रों के नाम उनका पद तथा वेशभूषा और आभूषण तथा पात्रों के वार्तालाप व आचरण सभी देशकालानुरूप हैं। इस नाटक की भाषा प्रवाहमय है। भाषा पात्रानुकूल एवं तत्कालीन परिस्थितियों का बोध करनेवाली है। शब्द की तीनों शक्तियों के गुण, ओज माधुर्य और प्रसाद आदि की प्रतिष्ठा भव्यता से हुई है। ऐतिहासिक नाटक होने के कारण भाषा में वीरोचित भाषा का उपयोग हुआ है।

इस नाटक में भावचित्रण के साथ साथ बौद्धिक विवेचन पर भी अत्यधिक बल दिया गया है। मिश्र जी पर इब्सन और शॉ का प्रभाव दिखाई देता है। इस रचना का उद्देश्य भारत की प्राचीन सांस्कृतिक महानता, का वर्णन करके उसके प्रति हमें अनुरक्त करता है। नाटक में उच्चतर भारतीय आदर्शों की प्रतिष्ठा हुई है और साथ ही यवन संस्कृति के दोषों उभार कर ऊपर लाये गये प्रतीत होते हैं। यह नाटक तीन अंकों में विभाजित हुआ है। नाटक का प्रधान रस वीर रस है और शृंगार रस का भी परिपाक अपेक्षाकृत अधिक पूर्ण है।

पाँचवें अध्याय में मंचीयता के बारे में विचार प्रकट किये हैं। पूरे नाटक के तीन अंकों में एक एक ही दृश्य है इसलिए दृश्य परिवर्तन आदि में विशेष समय नहीं लगेगा। पहले दृश्य में प्रासाद, वितान तथा सिंहद्वार तीनों दृश्य एक साथ प्रस्तुत करने का निर्देश है, लेकिन यह सम्भव नहीं हो सकता क्योंकि दुमंजिले भवन की व्यवस्था मंचपर आसानी से नहीं की जा सकती। दूसरे अंक की दृश्यसज्जा पर्याप्त विस्तृत है। तीसरे अंक का दृश्य विन्यास अत्यधिक सरल है क्योंकि इसका पूरा कथानक श्रुति के आधार पर चलता है। इस नाटक की कथा वस्तु का क्रियाव्यापार भी अधिकांश श्रव्य

होने के कारण ध्वंन की दृष्टि से सभी असुविधाजनक प्रश्नों की समस्या स्वतः ही हल हो गयी है। इसप्रकार अंतिम अध्याय उपसंहार में सभी अध्यायों का समाहार किया गया है।